आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा

1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-131 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | मई 2025 | मूल्य - 5 रुपए

झुलसती गर्मी में जिंदगी की छांव ढूंढते सड़क और कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर- रितिका, किशन, राजकिशोर एवं दीपक

देशभर में पड़ रही भीषण गर्मी ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। भारत के उत्तरी राज्यों में तापमान रोजाना 42 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दर्ज किया जा रहा है। इस झुलसा देने वाली गर्मी से सभी लोग परेशान हैं, लेकिन सवाल यह है कि सड़कों पर रहने वाले, कामकाजी बच्चे इस गर्मी का सामना कैसे कर रहे हैं? बालकनामा के पत्रकारों ने विभिन्न राज्यों में सड़क पर रहने वाले और काम करने वाले बच्चों से बात की, और जानने की कोशिश की कि यह बच्चे इस भयंकर गर्मी से कैसे जूझ रहे हैं।

नोएडा सेक्टर 115 में एक किराए के कमरे में रहने वाला 13 वर्षीय बालक रहमान (परिवर्तित नाम) अपनी गर्मी से जुड़ी परेशानियों के बारे में बताता है, 'हमारी एक छोटी सी रेहडी की दुकान है जिसमें हम फल और भुट्टा बेचते हैं। भुट्टा पकाने के लिए हमारे पास कोयले वाली मशीन है। लेकिन इस समय गर्मी इतनी ज्यादा हो गई है कि दुकान लगाने का मन ही नहीं करता। कई बार तो लगता है कि दुकान लगाएं या नहीं, बहुत आलस आता है। हम सोचते हैं कि शायद गर्मी धीरे-धीरे कम हो जाएगी, लेकिन हर दिन ये और बढ़ती जा रही है। इससे कई तरह की दिक्कतें हो रही हैं।' वह आगे कहता है, 'हम अपनी रेहडी रेड लाइट सिग्नल के पास लगाते हैं।

वहीं बगल में एक बड़ा पार्क है, जिसमें एक होदी (टंकी) है जिसमें साफ पानी रहता है। जब गर्मी बर्दाश्त से बाहर हो जाती है, तो हम उस पानी में नहा लेते हैं ताकि शरीर को कुछ राहत मिल सके। गर्मी में इतना पसीना आता है कि वह सूखता ही नहीं है। जब हम सड़क पर खड़े रहते हैं तो धूप बहुत तेज होती है। हम ठंडा पानी पीते हैं, लेकिन वह गर्मी की वजह से जल्दी गर्म हो जाता है।

जब बालकनामा के पत्रकार नोएडा की झुग्गियों में रहने वाले सड़क और कामकाजी बच्चों से मिलने पहुंचे और उनसे बढ़ती गर्मी के बारे में बातचीत की, तो वहां की एक 15 वर्षीय बालिका रूहानी (परिवर्तित नाम) ने बताया- हमारी बस्ती के ज्यादातर घर टिन की छतों से बने हैं। गर्मी शुरू होते ही बस्ती में रहने वाले सभी बच्चे बहुत परेशान हो जाते हैं। तेज धूप और उमस के कारण झुग्गियों के भीतर रहना बेहद मुश्किल हो जाता है। टिन की छतें इतनी गर्म हो जाती हैं कि घर का कोई भी काम धूप निकलने से पहले ही निपटाना पड़ता है। अगर समय पर काम न हो पाए तो बाद में टिन के गर्म होने से खाना बनाना, सफाई करना या आराम करना मुश्किल हो जाता है।

रूहानी ने आगे बताया, सुबह 10 बजे के बाद गर्मी का असर बहुत ज्यादा बढ़ जाता है। ऐसे में हम बच्चे और बड़े, सभी लोग बस्ती के आस-पास के बड़े पेड़ों की छांव में जाकर बैठते हैं ताकि थोड़ी राहत मिल सके। ज्यादातर घरों में पंखे तो हैं, लेकिन जब छत ही तप रही हो, तो पंखे भी गर्म हवा ही देने लगते हैं। ऐसे में घर में रहना नामुमकिन हो जाता है। उसने कहा, पेड़ों के नीचे बैठे-बैठे थोड़ी बहुत हवा तो चलती है लेकिन जब हवा भी बंद हो जाती है तो शरीर से पसीना बहने लगता है, जिससे खुजली और जलन होने लगती है। कई बच्चों

को गर्मी के कारण फोड़े-फुंसियां भी हो गई हैं। रात के समय बिजली अक्सर नहीं आती, जिससे हमें मजबूरन घर से बाहर ही सोना पड़ता है। सुबह का मौसम थोड़ा ठंडा होता है, और ऐसे में कई बार बच्चों को खांसी-जुकाम हो जाता है।

नोएडा सेक्टर-126 में रहने वाले 16 वर्षीय राकेश (परिवर्तित नाम) बताते हैं कि यदि गर्मी के समय बिजली लगातार मिलती रहे, खासकर रात के समय, तो हम काफी हद तक राहत पा सकते हैं। लेकिन यहां रात में बिजली आने का कोई तय समय नहीं है, जिससे नींद पूरी नहीं हो पाती और शरीर थका हुआ महसूस करता है।

राकेश बताते हैं कि उनका परिवार फल की रेहड़ी लगाता है। वे रोजाना दोपहर करीब 4 बजे रेहड़ी लेकर निकलते हैं, जबकि इस समय तेज धूप और गर्म हवा चल रही होती है। रेहड़ी जहां लगाई जाती है वह जगह उनके घर से लगभग एक किलोमीटर दूर है। इतनी तेज धूप में पैदल रेहड़ी ले जाना बहुत मुश्किल हो जाता है। वे बताते हैं, हमें कई बार रास्ते में पाँच-पाँच मिनट रुकना पड़ता है। जहां थोड़ी छांव दिखती है, वहीं खड़े हो जाते हैं। रुक-रुक कर ही आगे बढ़ते हैं।

राकेश कहते हैं कि वे गर्मी से बचने के लिए पानी की बोतल साथ लेकर चलते हैं और सिर पर रूमाल या टोपी बांधते हैं ताकि धूप से थोड़ी राहत मिल सके। फिर भी सिर ही नहीं, पूरी बॉडी पर तेज धूप लगती है, जिससे कपड़े पसीने से पूरी तरह भीग जाते हैं। हर साल जून-जुलाई के महीनों में उन्हें और उनके परिवार को खांसी-जुकाम, बुखार, फोड़े-फुंसियां, शरीर में पानी की कमी, चक्कर आना और सिरदर्द जैसी कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

राकेश बताते हैं कि इन बीमारियों से बचने के लिए वे नजदीकी अस्पताल से दवाइयाँ लेते हैं और कुछ घरेलू उपाय भी अपनाते हैं। घर में हम दूध में हल्दी मिलाकर पीते हैं, जिससे बुखार कम होता है। सुबह-सुबह नीम के पत्ते खाते हैं, जिससे फोड़े-फुंसी नहीं होते और शरीर भी ठीक रहता है। जहां वे रेहड़ी लगाते हैं, वहां पास में एक साइकिल की दुकान है। उस दुकान के मालिक ने अपनी दुकान के सामने बड़ी सी प्लास्टिक की पन्नी छांव के लिए लगवाई है। राकेश और उनके जैसे कई अन्य लोग तेज धूप से बचने के लिए उस पन्नी के नीचे बैठते हैं। जब प्यास लगती है, तो पास में ही खाने-पीने की कई ठेलियां लगी होती हैं, वहीं से पानी मिल जाता है। वहां पर पानी रहता है, तो हम कभी-कभी जाकर पी लेते हैं। कभी पानी ठंडा मिल जाता है, तो कभी गुनगुना होता है। इस वजह से जब ठंडा और गर्म पानी आपस में गले से टकराते हैं, तो हमें खांसी, जुकाम और सर्दी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हम बच्चे चाहते हैं कि हर घर में एक कूलर, पानी ठंडा करने वाली मशीन या फिर एक मटका जरूर होना चाहिए। साथ ही, दुकानों पर एक बड़ा छाता भी होना चाहिए, जिससे धूप कम लगे। अगर हम दुकान पर छाता लगा लें तो हमें धूप से राहत मिलेगी और हम बीमार भी नहीं पड़ेंगे। अब बात करते हैं पश्चिमी दिल्ली की। जैसे-जैसे गर्मी का तापमान बढ़ रहा है, दिल्ली में रहने वाले बच्चों की स्थिति और भी कठिन होती जा रही है। बाल पत्रकारों ने शकूर बस्ती में रहने वाले कई बच्चों से बातचीत की।

बच्चों ने गर्मी के असर और अपनी मुश्किलें विस्तार से साझा की। 16 वर्ष की रूबी (परिवर्तित नाम) बताती हैं, गर्मी का एक सामान्य दिन हमारे लिए बहुत मुश्किल भरा होता है। गर्मी का नाम सुनते ही हमारे चेहरे पर उदासी छा जाती है।

शेष पृष्ठ 2 पर

खेल भावना के जरिए सफलता की ओर बच्चों के बढ़ते कदम

बालकनामा रिपोर्टर- रितिका

12 अप्रैल को सामाजिक संस्था चेतना से जुड़े बच्चों को खो-खो और कबड्डी की प्रतियोगिता में भाग लेने का सुनहरा अवसर मिला। इस आयोजन ने बच्चों में नई ऊर्जा और उत्साह भर दिया। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चेतना संस्था की ओर से खो-खो और कबड्डी की दो-दो टीमें अर्थात कुल चार टीमें बनाई गईं, जिनमें एक जूनियर और एक सीनियर वर्ग की टीम शामिल थी। शुरूआत में बच्चों को इन पारंपरिक खेलों के नियमों और तकनीकों की ज्यादा जानकारी नहीं थी। इसे देखते हुए चेतना संस्था द्वारा एक विशेष कोच को बुलाया गया, जिन्होंने बच्चों को नियमित रूप से इन खेलों की ट्रेनिंग दी। लगातार अभ्यास और सीखने की लगन के चलते बच्चों ने न सिर्फ खेल के नियमों को समझा, बल्कि उसे खेलने की कला भी सीख ली। उन्हें यह भी बताया गया कि खो-खो और कबड्डी का इतिहास क्या है, इनके नियम क्या हैं और कैसे इन खेलों को प्रभावशाली तरीके से खेला जाता है। अंततः मेहनत रंग लाई और चेतना संस्था की टीम ने प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए सेकेंड पोजीशन हासिल की। प्रतियोगिता के बाद सभी खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया एवं बच्चों को पुरस्कार दिए जिससे उनके चेहरे खुशी से खिल उठे। बच्चों ने इस अनुभव को बेहद खास और मजेदार बताया। उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता में भाग लेकर उन्हें बहुत कुछ नया सीखने को मिला और यह पल उनके लिए हमेशा यादगार रहेगा। सेंटर के अन्य बच्चों ने भी खेल का भरपूर आनंद लिया और अपने साथियों का जोश और मेहनत देखकर प्रेरित हुए। चेतना से सामाजिक कार्यकर्ता ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा, 'अगली बार हम फिर से तुम्हें लेकर आएंगे, लेकिन इस बार तुम्हारा लक्ष्य फर्स्ट पोजीशन होना चाहिए।' इस पर बच्चों ने पूरे जोश से जवाब दिया, 'ठीक है, हम अगली बार जरूर फर्स्ट आएंगे!'

वास्तव में चेतना की इस पहल ने बच्चों में खेलों के प्रति रुचि जगाई है। साथ ही उन्होंने टीम वर्क, अनुशासन और मेहनत का असली मतलब भी सीखा जो न सिर्फ मैदान में, बल्कि जीवन के हर पहलू में उनकी मदद करेगा।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गहराते पानी के संकट से बच्चों का जीवन हुआ मुश्किल

बालकनामा रिपोर्टर - राज किशोर, गुरुग्राम
बातूनी रिपोर्टर - अशरफ

जब बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर ने गुरुग्राम की विभिन्न झुग्गी बस्तियों का दौरा किया, तो उन्होंने वहां एक गंभीर और चिंताजनक जल संकट देखा। लगभग हर बस्ती में पानी की भारी किल्लत थी। बच्चे और उनके परिवार रोजमर्रा की जरूरतों के लिए भी पानी के लिए संघर्ष कर रहे थे। पीने का साफ पानी मिलना तो दूर, नहाने और शौच जैसे जरूरी कामों के लिए भी उन्हें भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है।निवार्णा कंट्री क्षेत्र से बातूनी रिपोर्टर अशरफ ने बताया, ‘ यहां जब बिजली चली जाती है, तो मोटर बंद हो जाती है और पानी मिलना बंद हो जाता है। इस भीषण गर्मी में जब सबसे ज्यादा पानी की जरूरत होती है, तब हमें सबसे ज्यादा तकलीफ होती है। फिर हम लोग बहुत दूर-दूर से पानी लाने के लिए निकलते हैं, जिससे हमारा बहुत सारा समय इसी में चला जाता है।

अशरफ ने आगे बताया कि अगर सुबह से बिजली नहीं आती, तो उन्हें सुबह-सवेरे ही पानी के इंतजाम में लग जाना पड़ता है। जहां से पानी लाते हैं, वहां पहले से ही भारी भीड़ लगी रहती है और कई घंटों तक लाइन में लगना पड़ता है। अशरफ ने कहा, इस वजह से बाकी सारे काम, यहां तक कि हमारी पढ़ाई भी प्रभावित होती है। नहाना, शौच जाना आदि सबमें परेशानी होती है क्योंकि हर चीज के लिए पानी

चाहिए होता है। कभी-कभी सरकारी वाटर टैंकर आता है, लेकिन वो भी कुछ ही देर में खत्म हो जाता है। बस्ती के सभी लोगों को उनकी जरूरत के हिसाब से पानी नहीं मिल पाता। यह समस्या सिर्फ निवार्णा कंट्री की नहीं है, बल्कि आसपास की तमाम झुग्गी बस्तियों में भी यही हाल है। अशरफ ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, हमारे परिवार में सात सदस्य हैं, ऐसे में हमें ज्यादा पानी चाहिए होता है। लेकिन हम एक बार में कितना पानी ला सकते हैं? अब क्या करें? हमारी समस्या का क्या हल है? ये सवाल सिर्फ अशरफ का नहीं, बल्कि उन हजारों परिवारों का है जो झुग्गियों में रहते हैं और हर दिन पानी के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। यह सिर्फ एक सुविधा की कमी नहीं, बल्कि बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और गरिमा पर सीधा असर डालने वाला संकट है जिसे अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर बच्चों ने खुद सुनाई अपनी जीवन की कहानी

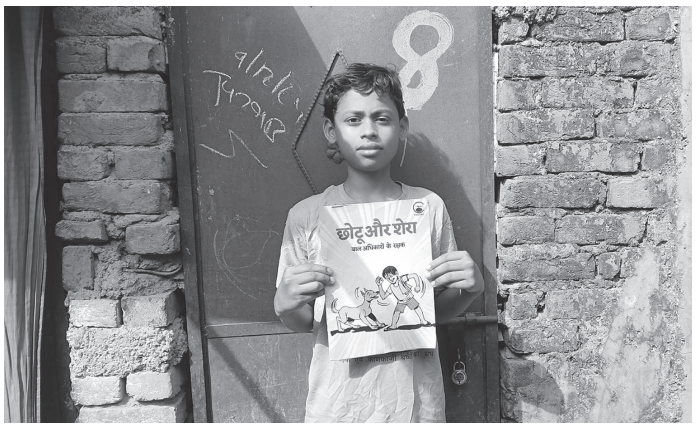

बालकनामा रिपोर्टर - सबेरुल
बातूनी रिपोर्टर - अजहरुल

इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के अवसर पर सामाजिक संस्था चेतना द्वारा एक बेहद संवेदनशील और सशक्त कार्यक्रम "अपनी कहानी अपनी जुबानी" का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उन बच्चों को मंच देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, जो सड़कों पर जीवन बिताते हैं और जिनकी आवाजें अक्सर समाज के शोर में दबकर रह जाती हैं। इस खास दिन पर जब इन बच्चों ने अपनी ज़िंदगी की सच्ची कहानियाँ साझा कीं, तो वहां मौजूद हर व्यक्ति की आंखें नम हो गईं। कार्यक्रम की शुरूआत एक प्रेरणादायक उद्घाटन भाषण से हुई, जिसमें आयोजकों ने इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके बाद बच्चों की प्रस्तुतियाँ शुरू हुईं, और एक के बाद एक बच्चे मंच पर आए। उन्होंने अपने संघर्ष, सपनों और अनुभवों को बेहद सरल, सजीव और आत्मीय भाषा में प्रस्तुत किया। 12 वर्षीय अजहरुल जब मंच पर आए और यह साझा किया कि वह कैसे चेतना संस्था से जुड़े और उनका जीवन कैसे बदला, तो पूरे सभागार में भावुकता की लहर दौड़ गई। इस कार्यक्रम ने केवल कहानियाँ नहीं सुनाईं, बल्कि एक संदेश दिया कि इन बच्चों को सिर्फ सहानुभूति नहीं, अवसर चाहिए।

चेतना संस्था के संस्थापक ने अपने वक्तव्य में कहा, "हमारा उद्देश्य इन बच्चों को सिर्फ सुनना नहीं, उन्हें बोलने का मंच देना भी है। यह कार्यक्रम उसी दिशा में समाज को यह दिखाने का एक प्रयास है कि जब तक हम इन मासूम आवाजों को नहीं सुनेंगे, तब तक सच्चा बदलाव संभव नहीं है। "अपनी कहानी अपनी जुबानी" सिर्फ एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि एक ऐसा आईना था, जिसने समाज को उसकी ज़िम्मेदारी याद दिलाई।

यह कार्यक्रम उन हजारों बच्चों के लिए आशा की किरण बनकर सामने आया, जो आज भी सड़कों पर जीवन जीने को मजबूर हैं। कार्यक्रम के अंत में, सभी बच्चों को बाल अधिकारों पर आधारित पुस्तक 'छोटू और शेरा' उपहार स्वरूप दी गई ताकि वे न केवल अपने अधिकार जान सकें, बल्कि आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें।

झुलसती गर्मी में जिंदगी की छांव ढूंढते सड़क और कामकाजी बच्चे

पृष्ठ 1 का शेष

ज्यादा गर्मी के कारण गुस्सा भी आता है और कोई काम करने का मन नहीं करता। शरीर में सुस्ती और थकान बनी रहती है। जब तापमान बहुत बढ़ जाता है तो सुबह 10 बजे के बाद घर के अंदर भी रहना मुश्किल हो जाता है। पानी की गैलन में भरा पानी इतना गर्म हो जाता है कि पीया नहीं जाता। ऐसे में गर्मी का एक आम दिन भी हमारे लिए बेहद परेशानी भरा हो जाता है। गर्मी से राहत पाने और शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए बच्चे अलग-अलग तरीके अपनाते हैं। हमारे आसपास कई पेड़ हैं, जिनकी छांव में ठंडक मिलती है। लेकिन अक्सर पेड़ों के पास लड़कों की भीड़ होने के कारण वहां लड़कियों का जाना मुश्किल हो जाता है। इस कारण, लड़कियां अपने घर में पंखे के नीचे बैठकर कपड़े और चुन्नी को गीला करके ओढ़ लेती हैं ताकि थोड़ा ठंडक महसूस हो। मयूर जग में भरा पानी तापमान के कारण गर्म हो जाता है, जिसे पीना मुश्किल होता है। इसलिए कई बच्चे पास की मार्केट से 50 से 70 तक की बर्फ खरीदकर लाते हैं और उसे जग में डाल देते हैं, ताकि पानी ठंडा हो जाए और पीने से कुछ राहत मिले। गर्म हवा (लू) चलने के कारण बच्चों को बुखार, कमजोरी और चक्कर जैसी समस्याएं हो रही हैं। कुछ बच्चों की आंखों की रोशनी भी कमजोर हो रही है, जिससे उन्हें ठीक से दिखाई नहीं देता। इस परेशानी से निपटने के लिए वे आंखों में ड्रॉप डालते हैं। साथ ही, घमोरिया (गर्मी से होने वाली स्किन समस्या) भी हो रही है, जिससे बचने के लिए बच्चे नजदीकी मेडिकल स्टोर से पाउडर खरीदकर लगाते हैं। इसके अलावा, बस्तियों के पास एक रेल पटरी है जहां ट्रेनों की मरम्मत की जाती है। जब ट्रेनें खड़ी होती हैं, तो कई बच्चे और बड़े लोग उन ट्रेनों के नीचे बैठ जाते हैं, जिससे उन्हें काफी ठंडक मिलती है। ट्रेन के चलने से पहले रेलवे कर्मचारी आकर सभी को सूचित कर देते हैं कि ट्रेन चलने वाली है और सभी लोग नीचे से हट जाएं।

बस्ती से लगभग 500-600 मीटर की दूरी पर एक प्लेटफार्म भी है। वहां बड़ी-बड़ी टिन की छत लगी हुई है, जिससे प्लेटफॉर्म के नीचे ठंडी हवा आती है। बच्चे और बड़े लोग वहां जाकर लंबे समय और कई बार तो चार से पांच घंटे तक बैठते हैं। बच्चों ने बताया कि गर्मी में सिर्फ ठंडी जगह ढूंढना ही काफी नहीं है, पानी भी सबसे बड़ी समस्या बन चुका है। बस्ती में पानी की भारी कमी है और सभी को इसे समझदारी से उपयोग करने की जरूरत है।

कुछ परिवारों के पास अपनी निजी टोंटी या मोटर हैं, लेकिन वे दूसरों को पानी नहीं देते, जिससे स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। बच्चों का कहना है कि अगर हम सभी मिलकर पानी की बचत करें तो जीवन थोड़ा आसान हो सकता है।

एक फैक्ट्री में काम करने वाले 15 वर्षीय बालक राजा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जहां वह काम करता है, वहां बहुत ज्यादा गर्मी होती है। हालांकि वहां पंखा लगाने का विकल्प है, लेकिन डर रहता है कि हवा से कोई ज्वलनशील वस्तु भड़क सकती है और फैक्ट्री में आग लग सकती है। इसी कारण वहां पंखा भी नहीं लगाया जा सकता और उन्हें तेज गर्मी के बीच ही काम करना पड़ता है। बच्चों ने अपनी समझ और अनुभव से गर्मी से निपटने के कई प्रयास किए हैं।

दिल्ली के शिवाजी पार्क मेट्रो के पास की बस्ती में रहने वाली 15 वर्षीय बालिका किरण (परिवर्तित नाम) ने बताया की "मैं पास की कोठियों में काम करने जाती हूं। वहां 24 घंटे रहकर मैं बच्चों को संभालती हूं, उनका ध्यान रखती हूं। हफ्ते में एक दिन मैं अपने घर आती हूं, ताकि अपने माता-पिता से मिल सकूं।" वह बताती है, गर्मी का दिन वैसे तो ज्यादा मुश्किल नहीं लगता, क्योंकि हम ज्यादातर समय कोठी के अंदर ही रहते हैं। लेकिन जब बाहर मॉल या बाजार कोई सामान लाने जाना पड़ता है, तब धूप बहुत तेज लगती है। कई बार मन करता है कि मालकिन से कहूं कि इतनी तेज धूप में नहीं जाना है, पर ये कहने से कोई फायदा नहीं होता। वो कहती हैं कि सबके लिए गर्मी है, लेकिन काम तो करना ही होगा। फिर मजबूरी में धूप में निकलना पड़ता है।

जयपुर में बालकनामा पत्रकारों ने जब बच्चों से मुलाकात की और गर्मी के मौसम को लेकर उनसे बातचीत की, तो कई अहम जानकारियाँ सामने आईं।

पत्रकारों ने जब बच्चों से सवाल किए कि वे इस मौसम में कैसे अपना ख्याल रखते हैं, तो एक 12 वर्षीय बालक आफताब (परिवर्तित नाम), जो जयपुर की एक बस्ती में रहता है, ने विस्तार से बताया कि वह और उसके साथी किस तरह से भीषण गर्मी से जूझ रहे हैं। उसने कहा कि तेज गर्मी के कारण हमें बहुत पसीना आता है, थकान हो जाती है और कई बार चक्कर भी आने लगते हैं। कुछ बच्चे पेड़ों की छांव में बैठना पसंद करते हैं, जहां उन्हें थोड़ी राहत मिलती है। बच्चों ने बताया कि गर्मी के कारण कई बार उन्हें चक्कर आते हैं, थकान महसूस होती है और कई बार खांसी-जुकाम भी हो जाता है। एक बच्चे ने बताया कि खांसी और छींक की वजह से पेट में दर्द होने लगता है, तब वे डॉक्टर के पास जाते हैं। हालांकि ज्यादातर बच्चे मानते हैं कि ये समस्याएँ आम हैं और जल्दी ठीक हो जाती हैं, इसलिए वे अक्सर दवाई पर ज्यादा पैसा खर्च नहीं करते, बल्कि घरेलू उपायों को प्राथमिकता देते हैं।

बच्चों ने बताया कि जब वे घर से बाहर निकलते हैं, तो सिर पर कपड़ा रखकर या छाता लेकर निकलते हैं ताकि धूप से बचाव हो सके। उन्होंने यह भी बताया कि कई बच्चे नंगे पैर ही बाहर निकल जाते हैं, खासकर जब पास की दुकानों तक जाना हो। इससे उनके पैरों में जलन और तकलीफ होती है। ऐसे में चप्पल पहनना जरूरी है ताकि वे स्वस्थ रहें। बढ़ती गर्मी का असर हर किसी की ज़िंदगी पर पड़ रहा है, लेकिन बच्चे अपनी समझदारी और छोटे-छोटे उपायों से खुद को सुरक्षित रखने की कोशिश कर रहे हैं।

अब तक हमने कुछ राज्यों के बच्चों की गर्मी से जुड़ी समस्याओं के बारे में चर्चा की है। तो आइये अब जानते हैं गुड़गांव में रहने वाले बच्चों की स्थिति।

हमने गुड़गांव के जेएमडी क्षेत्र की बस्ती में रहने वाली एक 13 वर्षीय बालिका से बात की। उसने बताया कि जब गर्मी सामान्य होती है, तब थोड़ा ठीक महसूस होता है, क्योंकि तब तेज धूप नहीं पड़ती और आने-जाने में भी थोड़ी राहत मिलती है। ऐसे समय में हम बच्चे बाहर खेलने भी निकल जाते हैं। लेकिन जब गर्मी तेज होती है, तो बाहर निकलने का मन नहीं करता, और घर में भी बहुत परेशानी होती है क्योंकि हमारा घर टिन से बना हुआ है, जिससे घर बहुत गर्म हो जाता है। उसने बताया कि गर्मी से बचने और शरीर को हाइड्रेट रखने के लिए वे बच्चे ज्यादा से ज्यादा पानी पीते हैं और ग्लूकोज का इस्तेमाल भी करते हैं। फल और ठंडी चीजें खाने की कोशिश करते हैं जिससे शरीर ठंडा बना रहे। बच्चों का मानना है कि दिन भर में कम से कम दो से तीन लीटर पानी पीना चाहिए और कुछ बच्चे दिन में दो से तीन बार नहाकर खुद को ठंडा महसूस करने की कोशिश भी कर रहे हैं।

इस बारे में 14 साल की बालिका चंचल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि गर्मी में हमें बिना जरूरत के बाहर नहीं निकलना चाहिए। अगर बाहर जाना जरूरी हो, तो हमें छाता लेकर या कोई कपड़ा सिर पर ढककर ही निकलना चाहिए। बाहर जाते समय एक-दो पानी की बोतल हमेशा साथ रखनी चाहिए, ताकि प्यास लगने या डिहाइड्रेशन से बचा जा सके। साथ ही, हमें फलों का सेवन अधिक करना चाहिए और ओआरएस घोल पीने से भी शरीर को मदद मिलती है। अंत में बालिका ने सुझाव दिया कि गर्मी में हमें सूती कपड़े पहनने चाहिए और ठंडी चीजें जैसे शरबत, पानी एवं जूस आदि का सेवन करना चाहिए। यदि कहीं आना-जाना हो, तो कोशिश करनी चाहिए कि बस या अन्य सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें, ताकि धूप में ज्यादा पैदल न चलना पड़े। यह सब किस्से बताते है कि किस तरह गर्मी का मौसम सड़क एवं कामकाजी बच्चों और उनके परिवारों के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आता है। नियमित बिजली आपूर्ति, साफ पानी और उचित छांव की व्यवस्था हो तो ऐसे बच्चों को काफी राहत मिल सकती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

स्कूल एडमिशन से बच्चों के चेहरे पर आई खुशी की झलक

बातूनी रिपोर्टर - प्रिया

गुरुग्राम की एक छोटी सी बस्ती बादशाहपुर सेक्टर 66 में एक ऐसा समुदाय बसता है, जहां सड़क पर जीवन बिताने वाले और कामकाजी बच्चे रहते हैं। ये वही बच्चे हैं जो कभी सड़कों पर भीख मांगते हैं, कभी कबाड़ बीनते हैं, तो कभी दुकानों पर छोटे-मोटे काम करते हैं। इनके माता-पिता शिक्षा के महत्व को पूरी तरह नहीं समझते, जिस कारण ये बच्चे स्कूल की चौखट तक नहीं पहुंच पाते। जब चेतना संस्था के कार्यकर्ता और केंद्र से जुड़े बच्चे समुदाय में जाते हैं, तो वे वहां के बच्चों और उनके परिवारों से मिलते हैं, शिक्षा के अधिकार और उसके महत्व के बारे में जागरूक करते हैं। जब वे किसी बच्चे से पूछते हैं कि वह स्कूल क्यों नहीं जाता, तो जवाब अक्सर यही होता है की "हमें स्कूल की जानकारी नहीं है", या "दूरी, फीस और दस्तावेजों की वजह से परेशानी होती है"। ऐसे में चेतना संस्था के कार्यकर्ता सिर्फ बातों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि बच्चों के अभिभावकों से मिलते हैं, उनके दस्तावेज तैयार करवाते हैं और खुद उन्हें स्कूल तक ले जाकर दाखिला दिलवाते हैं। ऐसी ही एक प्रेरणादायक कहानी है 13 वर्षीय सुप्रिया (परिवर्तित

नाम) की। यह होशियार बच्ची जो पढ़ना चाहती थी, लेकिन पारिवारिक कठिनाइयों की वजह से स्कूल नहीं जा पा रही थी। चेतना की टीम ने उसके माता-पिता से बातचीत की, सभी जरूरी दस्तावेज जुटाए और आज सुप्रिया छठी कक्षा में स्कूल जा रही है। उसकी आंखों में स्कूल जाने की खुशी और आत्मविश्वास साफ झलकता है। प्रिया के पड़ोस में रहने वाला 10 साल का बालक रॉनी (परिवर्तित नाम) भी अब चेतना सेंटर से जुड़ चुका है। कार्यकर्ताओं ने उसका भी दस्तावेजीकरण करवाया और माता-पिता को साथ लेकर बादशाहपुर के सरकारी स्कूल में उसका दाखिला करवाया। आज रॉनी तीसरी कक्षा में पढ़ रहा है और अपने शब्दों में चेतना संस्था का आभार व्यक्त करता है। उसके माता-पिता गर्व से कहते हैं "हमें बहुत अच्छा लगा कि कोई हमारी इतनी मदद कर रहा है।" अब इस प्रयास का असर पूरे समुदाय में दिखने लगा है। अन्य बच्चे और उनके माता-पिता भी शिक्षा को लेकर जागरूक हो रहे हैं। वे कार्यकर्ताओं के साथ स्कूलों का दौरा करते हैं, शिक्षकों से बातचीत करते हैं और अपने बच्चों के भविष्य को नई दिशा देने के लिए सक्रिय कदम उठा रहे हैं।

पूर्व बातूनी रिपोर्टर और बालकनामा संपादक की हुई यादगार मुलाकात

बातूनी रिपोर्टर सत्यम व रिपोर्टर किशन

सड़क और कामकाजी बच्चों के जीवन में 'बढ़ते कदम' संगठन और बालकनामा अखबार से जुड़ने के बाद कई सकारात्मक बदलाव आए हैं। अब अधिकांश बच्चे जीवन की कई महत्वपूर्ण बातें समझ चुके हैं और उनकी सोच में स्पष्ट बदलाव आया है। हाल ही में जब 'बढ़ते कदम' की टीम एक मीटिंग के लिए पहुंची, तो बालकनामा के एक पूर्व बातूनी रिपोर्टर से उनकी मुलाकात हुई, जो इस मिलने के दौरान दोनों पक्षों के लिए बहुत खुशी का मौका था।

इस बातचीत में उस रिपोर्टर, जो अब 15 वर्षीय राहुल के नाम से जाना जाता है, ने अपने जीवन की कहानी साझा की। राहुल ने बताया कि वे नोएडा सेक्टर 62 की सड़क किनारे बसे बस्तियों में अपने माता-पिता के साथ पिछले पांच वर्षों से रह रहे हैं। जब वे यहाँ आए थे, तो न तो उन्हें कोई जानता था और न ही वे किसी को जानते थे। उनके मन में सबसे बड़ा सवाल था कि क्या वे अपनी रुकी हुई पढ़ाई को फिर से शुरू कर पाएंगे। दो-तीन महीने बाद उन्हें 'नन्हे परिंदे' की एक मोबाइल शिक्षा वैन मिली, जहां वे चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं से मिले और अपनी समस्या बताई। उन्होंने कहा कि वे पहले अपने गांव में चौथी कक्षा तक पढ़ते थे, लेकिन नोएडा आने के बाद उनकी पढ़ाई रुक गई थी। कार्यकर्ताओं ने उन्हें बताया कि यह वैन उन बच्चों के लिए है, जो स्कूल नहीं जाते या किसी वजह से उनकी पढ़ाई रुकी हुई है।

इसके बाद राहुल 'बढ़ते कदम' से जुड़ गए और कुछ ही महीनों में बालकनामा के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने कई 'बढ़ते कदम' की बैठकों में भाग लिया, अपनी परेशानियां बताईं और बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर बन गए। उसी दौरान उनका स्कूल में पाँचवीं कक्षा में दाखिला भी हो गया और वे नियमित स्कूल जाने लगे। हालांकि कुछ समय बाद 'बढ़ते कदम' की मीटिंगों में आना थोड़ा कम हो गया, लेकिन अब राहुल आठवीं कक्षा पास कर चुके हैं और नौवीं में दाखिला लेने की प्रक्रिया चल रही है। राहुल ने कहा कि नोएडा आकर और 'बढ़ते कदम' से जुड़कर उनके जीवन में बहुत बदलाव आया है। बालकनामा के बारे में जानना, बातूनी रिपोर्टर बनना और पढ़ाई फिर से शुरू करना उनके लिए एक सपना पूरा होने जैसा था। इस बदलाव को देखकर उनके माता-पिता भी बहुत खुश हैं और उनका सपोर्ट भी राहुल को लगातार मिलता रहता है।

शिक्षा के अधिकार से बच्चों का जीवन हुआ जगमग

रिपोर्टर - राजकिशोर गुरुग्राम
बातूनी रिपोर्टर - सोनू गुरुग्राम

रिपोर्टर राजकिशोर जब गुरुग्राम के जेएमडी इलाके की बस्तियों में पहुंचे, तो उन्होंने वहां रहने वाले बच्चों को स्कूल में दाखिला लेने के दौरान आने वाली अनेक समस्याओं का पता लगाया। ये बस्तियाँ मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल से आए परिवारों की हैं, जो वर्षों से यहीं बसे हुए हैं। लेकिन सबसे बड़ी समस्या दस्तावेजों की कमी थी। 11 साल के सोनू ने बताया की " हमारे पास अक्सर आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र या जन्म प्रमाण पत्र जैसे जरूरी दस्तावेज नहीं होते, जिसकी वजह से हम सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाते। और जब हम स्कूल में एडमिशन के लिए जाते हैं, तो शिक्षक कहते हैं कि आधार कार्ड अनिवार्य है। इससे हम बहुत परेशान हो जाते हैं।" जब यह बात चेतना संस्था के कार्यकर्ता को पता चली, तो उन्होंने तुरंत मामले को गंभीरता से लिया। उन्होंने स्कूल जाकर शिक्षकों से बात की और समझाया कि इन बच्चों का भविष्य सीधे शिक्षा से जुड़ा है, इसलिए उन्हें थोड़ा वक्त दिया जाना चाहिए ताकि वे दस्तावेज पूरा कर सकें। कई बार बातचीत और कोशिशों के बाद स्कूल प्रशासन ने सहमति जताई। इसके बाद चेतना संस्था की मदद से सोनू के सारे जरूरी दस्तावेज बनवाए गए और उसका स्कूल में सफलतापूर्वक दाखिला हो गया। एडमिशन मिलने के बाद सोनू की खुशी देखते ही बनती थी, उसका चेहरा जैसे खिल उठा हो। यह केवल सोनू की कहानी नहीं है, बल्कि उन अनगिनत बच्चों की भी है जो दस्तावेजों के अभाव में शिक्षा से दूर रह जाते हैं। लेकिन जब किसी सामाजिक संस्था का सहयोग और एक समर्पित कार्यकर्ता की मदद मिलती है, तो शिक्षा का अधिकार सचमुच इन बच्चों की जिंदगी में उम्मीद की किरण बनकर जगमगा उठता है।

माता-पिता के दुर्व्यसनों से बचपन पर पड़ता नशे का साया

ब्यूरो रिपोर्ट

हर घर में बच्चे होते हैं, और बच्चे तो बस बच्चे ही होते हैं। लेकिन अगर उन्हें सही और गलत का उचित समय पर अहसास हो जाए तो वे गलतियाँ क्यों करें? आजकल अधिकतर घरों में ऐसा देखा जाता है कि जब बच्चे छोटे होते हैं और कोई भी छोटी-बड़ी गलती कर देते हैं, तो माता-पिता उस गलती की गंभीरता को समझ नहीं पाते। धीरे-धीरे वह छोटी-छोटी गलतियाँ बढ़कर बड़ी समस्याओं का रूप ले लेती हैं, जिससे परिवार को परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हम इस विषय पर इसलिए बात कर रहे हैं क्योंकि हाल ही में जब बालकनामा पत्रकार बस्ती में बच्चों से मिले, तो बातचीत के दौरान एक बेहद चिंताजनक बात सामने आई। ज्यादातर बच्चे नशे की लत में बढ़ते जा रहे हैं, और यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इसके पीछे माता-पिता भी एक बड़ी वजह बन रहे हैं। एक 8 साल की बालिका नूतन (परिवर्तित नाम) से इस विषय पर विस्तार से बात की गई, जो खुद इस लत में फँसी हुई थी। उसने बताया कि वह नोएडा में अपने माता-पिता के साथ किराए के कमरे में रहती है। उनके परिवार में चार सदस्य हैं - एक भाई, एक बहन और माता-पिता। मां कोठियों में काम करती हैं और पिता एक कंपनी में ड्राइवर हैं। दोनों माता-पिता गुटका, सिगरेट और शराब का सेवन करते हैं। मां दिनभर में 50 से 70 रुपये का गुटका खाती हैं, और जब भी वह गुटका खाते हैं, तो उसमें से कुछ दाने बच्चों को भी दे देती हैं। पहले वे बच्चों को बस एक-दो दाने देती थीं, लेकिन अब बच्चे खुद

ही रोज मां से गुटका मांगने लगे हैं, और मां बिना कुछ कहे दे देती हैं। बालिका ने बताया कि रात को दोनों माता-पिता मिलकर शराब पीते हैं और बच्चे वहीं अपने पलंग पर बैठे रहते हैं। पिता ने बच्चों को भी शराब पीना सिखा दिया है। बड़े भाई को भी यह आदत लगी हुई है। पिता ज्यादा मात्रा नहीं देते, लेकिन एक पानी के ढक्कन के बराबर शराब देते हैं और कहते हैं कि यह खांसी और जुकाम नहीं होने देगा। फिर उसी के ऊपर पेप्सी पिला देते हैं ताकि पेट में गैस न बने। यह आलम सिर्फ उनके परिवार में ही नहीं है बल्कि उनके आस-पास एक और छोटी बच्ची है, जिसकी उम्र लगभग 5-6 साल है, जो अपने घर में इसी तरह शराब का सेवन करती है, क्योंकि उसके माता-पिता भी उसे ऐसा करने के लिए मजबूर करते हैं। यह सुनकर पत्रकारों का मन बहुत दुखी हो गया। उन्होंने बच्चों को समझाया कि जब हम गलत संगति में जाते हैं, तो धीरे-धीरे हम उन गलत आदतों को सीखते हैं, जो हमारे शरीर और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए बहुत नुकसानदायक होती हैं। उन्होंने बच्चों से विनती की कि वे इस आदत को छोड़ दें और भविष्य में कभी भी ऐसी गलत चीजों को दोहराएं नहीं। यह घटना बच्चों की मजबूरी और माता-पिता की लापरवाही के साथ हमें भी एक चेतावनी देती है कि बच्चों के जीवन में सही मार्गदर्शन और प्रेम कितना आवश्यक है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

'माता' की मार से हुई बालिका बीमार

बालकनामा रिपोर्टरः दामिनी
बातूनी रिपोर्टरः नगमा

जयपुर की जेडीए बापू बस्ती, जो एक कच्ची बस्ती है, हर साल की तरह इस बार भी गंदगी और अस्वच्छता से जूझ रही है। इन तंग गलियों में रहना तो कठिन है ही, पर जब गंदगी का असर बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर पड़ता है, तब स्थिति और भयावह हो जाती है। यहां के बच्चे न केवल स्कूल जाते हैं, बल्कि कबाड़ बीनने, फेरी लगाने जैसे छोटे-मोटे काम भी करते हैं। पर स्कूल और काम पर जाने का रास्ता वही है जहां कूड़े के ढेर बीमारियों को दावत देते हुए शेर की तरह दहाड़ते हैं। गंदगी और गंदे पानी के चलते यहां "माता" (चिकनपॉक्स) का संक्रमण तेजी से फैल रहा है। टोंक से तीन साल पहले अपने परिवार के साथ यहां आकर बसी 13 वर्षीय नजमा (परिवर्तित नाम), एक होशियार और पढ़ाई में रुचि रखने वाली बालिक भी इसका शिकार हो गई है। वह इस साल 8वीं बोर्ड की परीक्षा देने वाली थी, लेकिन बीमारी ने उसे बिस्तर से बांध दिया। जिस गली से वह अपनी मां को टिफिन देने रोज जाती थी, वही गली अब उसके लिए बीमारी की वजह बन गई। नजमा का घर किराए का घर है और उसकी गली की हालत इतनी खराब है कि वहां से निकलना ही अपने आप में जोखिम है। अब वह बिस्तर पर लेटी बस छत के पंखे को देखती रहती है, जिसकी आवाज ही उसके कमरे में सबसे ज्यादा चलती है। उसका एक साल बर्बाद हो गया, और यह पीड़ा उसके पीले चेहरे पर साफ झलकती है। पिता पहले से लकवे के शिकार हैं, और अब छोटी बहन ने भी स्कूल जाना छोड़ दिया है ताकि वह अपनी बीमार बहन की देखभाल कर सके। विडंबना यह है कि उनकी मां एक बड़े निजी अस्पताल में झाड़ू लगाने का काम करती हैं, पर कम छुट्टियों के कारण बेटी की देखभाल भी ठीक से नहीं कर पा रही हैं। बालकनामा रिपोर्टर जब बस्ती में अन्य बच्चों की स्थिति जानने पहुंचे तो पता चला कि आस-पास कम से कम छह और बच्चे "माता" अर्थात चिकनपॉक्स से पीड़ित हैं, और उनकी परीक्षाएं सिर पर हैं। इन कामकाजी बच्चों के लिए सड़कें कहीं भी जा सकती हैं, लेकिन स्कूल तक पहुंचना और वहां सफलता की परीक्षा देना एक कठिन संघर्ष बन चुका है।

जब हौसलों को मिली चेतना के साथ उड़ान, बालिका ने पाया परीक्षा में पहला स्थान

बालकनामा रिपोर्टर - रितिका

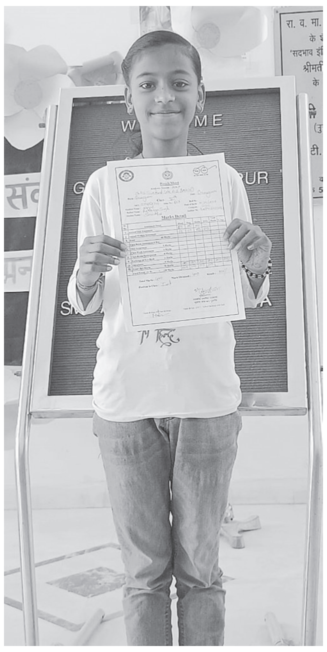

गुरुग्राम के चक्करपुर समुदाय में स्थित सामाजिक संस्था चेतना के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र में पढ़ने वाली 12 वर्षीय छात्रा काजल ने हाल ही में आयोजित पांचवी कक्षा की परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल कर अपने परिवार, स्कूल एवं चेतना संस्था का नाम रोशन किया है। मूलतः उत्तर प्रदेश की रहने वाली काजल अपने परिवार के साथ चक्करपुर में रहकर पढ़ाई कर रही है और चेतना के शिक्षा केंद्र की नियमित छात्रा है। बालकनामा पत्रकार ने जब काजल से मुलाकात की तो उसकी सफलता की कहानी जानी। काजल ने बताया, "मैं हर दिन सुबह और शाम पढ़ाई करती थी और पूरी लगन के साथ पेपर की तैयारी की, इसीलिए मैं फर्स्ट आई हूँ। जब पूछा गया कि उसकी पढ़ाई में किसी ने मदद की या नहीं, तो काजल ने बताया, "चेतना संस्था ने मेरी बहुत मदद की है। उन्होंने मुझे लगातार गाइड किया और पढ़ाई में सहयोग दिया।" काजल पिछले वर्ष कक्षा 5 में पढ़ रही थी और अब वह कक्षा 6 में प्रवेश कर चुकी है। पांचवीं कक्षा में प्रथम स्थान आने पर काजल को पूरे स्कूल में सम्मानित किया गया, जिससे बालिका के माता-पिता बहुत खुश हुए। पत्रकार ने काजल को आगे भी मेहनत करने और पढ़ाई में इसी तरह आगे बढ़ते रहने की शुभकामनाएं दीं। बच्ची ने कहा, "मैं अपनी पढ़ाई को हमेशा जारी रखूंगी और एक अच्छी अध्यापिका बनूंगी।" चेतना संस्था के इस योगदान ने यह साबित कर दिया है कि सही मार्गदर्शन और समर्पण से हर बच्चा अपनी मंज़िल हासिल कर सकता है।

क्या है मासूम जोकर की रंगीन मुस्कान के पीछे का सच?

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक, बातूनी रिपोर्टरः अर्जुन

जयपुर के आगरा रोड से कुछ दूर एक सामुदायिक केंद्र के पास, 13 वर्षीय अनुज (परिवर्तित नाम) अपने परिवार के साथ एक छोटी सी झुग्गी में रहता है। यह बालक अपनी जिंदगी की जरूरतें पूरी करने के लिए जोकर बनकर लोगों का मनोरंजन करता है। उसके रंग-बिरंगे कपड़े और चेहरे पर मुस्कान तो होती हैं, लेकिन उसके दिल में छुपा हुआ दर्द और जिम्मेदारियों का भारी बोझ नजर आता है। रोजाना अनुज सड़कों, मेलों और पार्कों में जाकर लोगों को हँसाने की कोशिश करता है। जो पैसे उसे मिलते हैं, वे कभी खुद के खाने-पीने, कभी दवा के लिए और कभी छोटे भाई-बहनों के लिए कपड़ों पर खर्च हो जाते हैं। अनुज को स्कूल जाने का मौका भी मिला था, लेकिन वहां के शिक्षकों के कठोर व्यवहार और उपेक्षा ने उसके मन को तोड़ दिया। अब वह पढ़ाई से दूर हो गया है और कहता है, 'स्कूल में डांट-डपट और मजाक उड़ाने से अच्छा है, यहाँ कम से कम लोग ताली बजाते हैं।' अनुज की ये सच्चाई समाज में पिछड़े बच्चों की संघर्षशीलता नहीं, बल्कि हमारे समाज की शिक्षा व्यवस्था की कमजोरियों और बाल श्रम जैसी कठिन वास्तविकताओं को भी सामने लाती है।

रात में लगी आग ने बच्चों का सब कुछ किया खाक

रिपोटर प्रिन्स कुमार

आज हम उन बच्चों की कहानी साझा कर रहे हैं जो हर दिन किसी न किसी कठिनाई से जूझते हैं। यह खबर दिल्ली के शकुरपुर बस्ती के उन बच्चों की है, जो एक भयानक हादसे में एक ही रात में बेघर हो गए। 9 अप्रैल की रात करीब 3 बजे का समय था। 11 साल का सोनू (परिवर्तित नाम) पानी की किल्लत के चलते पास के समुदाय से पानी लेने गया हुआ था। जब वह वापस लौटा, तो उसने देखा कि बस्ती के चारों ओर भयंकर आग लगी हुई थी। वह घबरा गया, पर हिम्मत जुटाकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा ताकि सब लोग जाग जाएं। वह दौड़कर अपनी झुग्गी की ओर गया, अपने घरवालों को बाहर निकाला और छोटे भाई-बहनों को गोद में उठाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। इतना ही नहीं, उसने आग के बीच से अपना गैस सिलेंडर भी बाहर निकाला। इस दौरान सोनू खुद भी आग से झुलस गया। बस्ती में चारों तरफ अफरा-तफरी मच गई, लोग चीखने-चिल्लाने लगे, किसी को समझ नहीं आ रहा था क्या करें? सोनू और उसके दोस्तों ने तुरंत फायर ब्रिगेड को फोन किया। थोड़ी ही देर में दमकल की गाड़ियाँ पहुँचीं और आग पर काबू पाया गया, लेकिन तब तक 13 झुग्गियां जल चुकी थीं। लोगों का सारा सामान खाक हो गया। उस रात इन परिवारों को खुले आसमान के नीचे प्लेटफॉर्म पर सोना पड़ा। सोनू ने बताया कि आग में उसकी किताबें और स्कूल की यूनिफॉर्म भी जल गईं। इसी कारण वह चार दिन तक स्कूल नहीं जा सका और इन दिनों उसे ठीक से खाना भी नसीब नहीं हुआ। उसकी आँखों में डर और भविष्य को लेकर चिंता साफ झलकती है। वह कहता है "पता नहीं कब तक हमें ये सब झेलना पड़ेगा।" यह सिर्फ एक दुर्घटना नहीं, बल्कि हमारे समाज के उस सच को प्रतिबिंबित करती है जिसे अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। वो बच्चे, जो हर रोज जीवन की लड़ाई लड़ते हैं, और फिर भी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ते।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

डर के साए में दबते सपने

बातूनी रिपोर्टर सोनाली व रिपोर्टर किशन

भारत में आए दिन हो रहे हादसों की खबरें जब मीडिया के जरिए घर-घर तक पहुंचती हैं, तो उसका सबसे गहरा असर लड़कियों पर पड़ता है। कई घरों में यह खबरें डर में बदल जाती हैं और उसी डर के नाम पर लड़कियों की आजादी पर बंदिशें लगाई जाने लगती हैं। अगर कोई लड़की किशोरावस्था में कदम रख चुकी है, तो उसे घर से बाहर निकलने की इजाजत नहीं मिलती। उसके सपनों को पंख लगने से पहले ही कतर दिया जाता है। ऐसी ही एक घटना को नोएडा की बस्तियों में रहने वाली 15 वर्षीय एक किशोरी बबीता (परिवर्तित नाम) ने अपनी आंखों में आंसू और दिल में भारीपन लिए साझा किया। वह बताती है कि "मैं 15 साल की हूं और नोएडा की एक बस्ती में अपने माता-पिता के साथ किराए पर रहती हूं। पापा बेलदारी (मजदूरी) का काम करते हैं और माँ आस-पास की कोठियों में सफाई का काम करती हैं। मैं पढ़ाई में बहुत रुचि रखती हूं और अब तक आठवीं कक्षा पास कर चुकी हूं। हमारे पास में जो स्कूल था, वहीं तक केवल मैं पढ़ सकी लेकिन जब मैंने पापा से आगे की पढ़ाई की बात की तो उन्होंने साफ मना कर दिया। इस पर पिता का कहना था कि 'हर दिन किसी न किसी लड़की के साथ कुछ गलत हो रहा है। ऐसे में मैं तुम्हें 10 किलोमीटर दूर स्कूल कैसे जाने दूं?' उनकी बात में चिंता थी, पर उस चिंता के पीछे एक दीवार भी खड़ी थी जो उनकी बेटी के सपनों को रोक रही थी। लड़की कहती है 'मैं बहुत नाराज हूं, पर मैं समझती भी हूं कि पापा डरते हैं। लेकिन क्या डर की वजह से मैं पढ़ाई छोड़ दूं? क्या मेरे सपनों की कोई कीमत नहीं?' वह बताती है कि अब उसे डर इस बात का सता रहा है कि यदि उसने अपनी पढ़ाई नहीं जारी रखी, तो कुछ महीनों में ही उसके पिता उसकी शादी की बात छेड़ देंगे। अब सवाल ये खड़ा होता है की एक बालिका जो खुद अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है, जो अपने जीवन को खुद संवारना चाहती है क्या उसके हिस्से में केवल डर और बंदिशें ही आएंगी? क्या वास्तव में उसके सपनों की कोई कीमत नहीं?

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बिजली के खतरों के बीच पेड़ काटते नन्हे हाथ

बातूनी रिपोर्टर मनीराम व रिपोर्टर किशन

बढ़ती महंगाई के इस दौर में हर किसी को पैसे बचाने की जरूरत है, लेकिन सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए यह जरूरत एक मजबूरी बन चुकी है। जब बालकनामा पत्रकारों की बच्चों के साथ 'बढ़ते कदम' मीटिंग हो रही थी, तब एक 13 वर्षीय बालक अबुल (परिवर्तित नाम) ने अपनी जिंदगी की सच्चाई साझा की। वह नोएडा की बस्तियों में अपने परिवार के साथ रहता है। उसका कहना था कि उसके पूरे परिवार का काम सड़कों, गलियों और खाली मैदानों में उग आए बड़े-बड़े पेड़ों को काटना है। ये पेड़ अक्सर बिजली के तारों तक पहुंच जाते हैं, जिससे करंट का खतरा पैदा हो जाता है। ऐसे में जब बिजली विभाग के कर्मचारी तारों की मरम्मत करने आते हैं, तो वे इन बच्चों को भी अपने साथ ले जाते हैं। ये बच्चे उन पेड़ों की शाखाओं को काटते हैं जो बिजली के तारों से टकरा रही होती हैं। कर्मचारी बताते हैं कि पेड़ को कहां से काटना है और पहले बिजली की सप्लाई बंद कर दी जाती है ताकि किसी को करंट न लगे। इस जोखिम भरे काम के बदले इन बच्चों को मामूली मेहनताना जैसे एक घंटे के सौ रुपये और इसी प्रकार मजदूरी दी जाती है वो भी तब, जब कर्मचारी द्वारा देने का मन करें, वरना कई बार बिना पैसे दिए ही काम करवा लिया जाता है। इस बच्चे ने बताया कि उसके बड़े भाई मुख्य रूप से पेड़ काटते हैं, लेकिन वह खुद भी छोटे पेड़ काटने का काम करता है। कटे हुए पेड़ों की लकड़ी को वे दोनों भाई मिलकर दुकानों पर बेचने के लिए ले जाते हैं। अधिकतर लकड़ी गीली होती है, इसलिए उसे सूखी लकड़ी के मुकाबले काफी कम कीमत पर बेचना पड़ता है। जहां सूखी लकड़ी 20 से 25 प्रति किलो बिकती है, वहीं गीली लकड़ी सिर्फ 3 प्रति किलो बिकती है। कुछ लकड़ी वे घर भी ले जाते हैं, ताकि वह सूखने के बाद चूल्हे में जलाने के काम आ सके। बालक की बातों से साफ जाहिर होता है कि वह अपनी उम्र के लिहाज से कितनी कठिन और जोखिमभरी ज़िंदगी जी रहा है। जिस उम्र में उसे स्कूल में होना चाहिए, उस उम्र में वह अपने घर का पेट पालने के लिए बिजली के खंभों के पास पेड़ों पर चढ़ता है। विडंबना है पेड़ काटने की यह मेहनत ही उसके परिवार की रोटी बनती है।

कर्ज के कारण बाल श्रम करने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टरः दीपक
बातूनी रिपोर्टरः दिनेश

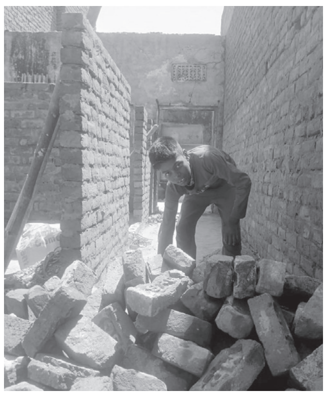

बालकनामा रिपोर्टर दीपक जब जयपुर की हेमनगर कच्ची बस्ती में सड़क और कामकाजी बच्चों के अनुभव जानने पहुँचे, तो एक मार्मिक दृश्य ने उन्हें झकझोर कर रख दिया। रास्ते में एक 13 वर्षीय बालक ईंटें उठाता दिखा। बातचीत की कोशिश की गई, लेकिन आस-पास मौजूद बड़ों ने संवाद करने से रोक दिया। कुछ समय बाद जब रिपोर्टर ने फिर प्रयास किया, तो जो कहानी सामने आई वह दिल को छू जाने वाली थी।बालक महेश ने बताया कि उसके घर की आर्थिक हालत बहुत खराब है। उसके पिता कोई काम नहीं करते और जो थोड़े बहुत पैसे उसकी मां कमाती हैं, वे भी वह छीन लेते हैं और शराब में उड़ा देते हैं। नशे की हालत में वे घर में गाली-गलौज और मारपीट करते हैं। महेश की मां ने घर चलाने और जरूरी खर्चों के लिए ब्याज पर कर्ज लिया था, लेकिन समय पर चुका न पाने के कारण कर्ज बढ़ता गया। अंततः आर्थिक दबाव के कारण महेश की पढ़ाई छूट गई। अब महेश अपने रिश्तेदारों के सहयोग से जो भी काम मिलता है, करता है। पिछले कई दिनों से वह ईंटें उठाने का काम कर रहा है। वह थक जाता है क्योंकि काम उसके शरीर से भारी है, लेकिन भूख की आग बुझाने के लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ता है। उदासी और बेबसी से भरे स्वर में महेश कहता है-अगर मेरे पिताजी को शराब की लत न होती, तो शायद आज मैं भी स्कूल जा रहा होता।

सड़क के किनारे बिखरता बचपन

बातूनी रिपोर्टर ज्योति व रिपोर्टर किशन

जब सड़क और कामकाजी बच्चे खुद मेहनत कर रहे होते हैं, और उनके सामने ही दूसरे बच्चे कठिन हालातों में, भीख मांगते या बेहद गंभीर काम करते दिखाई देते हैं, तो यह नजारा उन्हें भीतर तक झकझोर देता है। ऐसा ही एक अनुभव सामने आया जब बालकनामा पत्रकारों की टीम ने नोएडा सेक्टर 62 का दौरा किया। वहां उन्होंने एक 14 साल की बालिका सुमन (परिवर्तित नाम) से बातचीत की, जो खुद भी एक कामकाजी बालिका है। उसने न सिर्फ अपनी कहानी साझा की, बल्कि अपने आसपास के बच्चों की स्थिति भी खुलकर बताई। उसने बताया कि वह अपनी बस्ती में रहती है, जहां सड़क किनारे उसकी एक छोटी सी दुकान है- जिसमें चाय, बिस्किट, गुटका और नमकीन जैसे सामान बिकते हैं। स्कूल से लौटने के बाद वह अधिकतर समय अपनी दुकान पर बिताती है, और उससे पहले बालिका की मां दुकान पर रहती हैं। यह दुकान 'आई-जोन परीक्षा केंद्र' के पास लगती है, जहां रोजाना विभिन्न राज्यों से आए परीक्षार्थी अपनी परीक्षा देने आते हैं। परीक्षा वाले दिन इस क्षेत्र में काफी भीड़ रहती है।

सुमन बताती है कि जब वह दुकान पर बैठी होती है, तो हर दिन कई ऐसे बच्चे वहां नजर आते हैं जो उम्र में छोटे होते हैं अर्थात जिनकी उम्र करीब 7 से 16 साल तक रहती है और ये सब भीख मांगते हैं। परीक्षा केंद्र खुला होने के दिन ये बच्चे सुबह-सुबह वहां पहुंच जाते हैं और राहगीरों से पैसे मांगते हैं। कई लोग बच्चों की हालत देखकर पैसे दे देते हैं, कुछ सोचते हैं कि गरीब बच्चों की मदद देने से भगवान उनका भला करेंगे। वहीं कुछ लोग बच्चों को डांटते हैं या उनसे दूरी बनाकर रखते हैं। इस बच्ची ने बताया कि जब कभी ये बच्चे उसकी दुकान पर आते हैं, तो वह उन्हें कुछ खाने-पीने की चीजें खुशी-खुशी दे देती है। लेकिन एक दिन जब उसने एक बच्ची से बातचीत की, तो उसने जो बताया, वह सुनकर उसका दिल भर आया। वह बच्ची बेहद गरीब परिवार से थी और तिरपाल की झुग्गी में रहती थी। उसने कहा कि उनका कोई ठिकाना नहीं है और कभी भी, कोई उन्हें वहां से हटा सकता है। इसलिए वह भीख मांगने आती है ताकि अपने घर का गुजारा कर सके।

खेलने-कूदने की उम्र में काम करने को मजबूर विजय

बालकनामा रिपोर्टर आसिफ अंसारी

जिस उम्र में बच्चे खेल-कूद करते हैं और स्कूल जाते हैं, उसी उम्र में 13 साल के विजय पर घर की पूरी जिम्मेदारी है। बालकनामा रिपोर्टर आसिफ से बातचीत के दौरान विजय (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वे मूल रूप से बिहार के रहने वाले हैं। बिहार में उनके परिवार में आपसी कलह के कारण उन्हें दिल्ली आना पड़ा। विजय के माता-पिता दोनों विकलांग हैं, जिससे वे कोई भी काम करने में असमर्थ हैं। उनके पिता कभी-कभी कीर्ति नगर थाना के पास भीख मांगते हैं, लेकिन उससे घर चलाना मुश्किल हो जाता है। इसी मजबूरी के चलते विजय को दिल्ली के एक ढाबे पर बर्तन धोने का काम करना पड़ता है। बातचीत के दौरान विजय ने बताया कि कई बार पुलिस चेकिंग के दौरान ढाबे का मालिक उसे निकाल देता है, लेकिन बाद में दया दिखाकर काम पर रख लेता है। विजय आगे कहता है कि जब भी वह स्कूल जाने वाले बच्चों को देखता है, तो वह सोचता है कि वह भी बड़ा होकर डॉक्टर बनेगा, लेकिन घर की जिम्मेदारियों के कारण वह स्कूल नहीं जा पाता। फिर भी उसकी यह इच्छा है कि उसका छोटा भाई पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बने और उसकी मदद करे, ताकि वह भी भविष्य में शिक्षा हासिल कर सके। मैं, बालकनामा रिपोर्टर आसिफ, सभी से यह विनती करता हूं कि बाल श्रम को जल्द से जल्द समाप्त किया जाए, ताकि विजय जैसे सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिल सके और उनका भविष्य उज्जवल बन सके।

कम किराया पर भारी जीवन, ऐसे झुग्गियों में पलता है बचपन

बातूनी रिपोर्टर नूर व रिपोर्टर किशन

जब सड़क पर जीवन यापन करने वाले या कामकाजी बच्चों के पास कमरे का किराया देने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं होते, तो वे आसपास की बस्तियों में झुग्गियाँ बनाकर रहने को मजबूर हो जाते हैं। कई बार जब पत्रकार इन बस्तियों का दौरा करते हैं, तो वे यह नोट करते हैं कि यहाँ रहने वाले बच्चे गंदे और फटे पुराने कपड़ों में दिखाई देते हैं। यहाँ तक की उनके शरीर भी साफ नहीं होते परन्तु जब एक पत्रकार ने स्वयं अपनी आंखों से इस स्थिति को एक बस्ती में जाकर देखा, तो वह दृश्य उसे भीतर तक झकझोर गया। उसने आसपास के बच्चों से इस बारे में विस्तार से बात की। एक 14 वर्षीय राम (परिवर्तित नाम) बच्चे ने बताया कि उसकी बस्ती में लगभग 20 से 25 झुग्गियाँ हैं, लेकिन वहां न तो बर्तन धोने की कोई उपयुक्त जगह है, न ही कपड़े धोने या नहाने के लिए कोई शौचालय। बस्ती में रहने वाले अधिकतर लोग कबाड़ बीनने का काम करते हैं। जब वे कबाड़ बीनने जाते हैं, तो कई बार उन्हें बड़े-बड़े थमाकोल के टुकड़े मिलते हैं। इन्हीं थमाकोल की पेटियों को वे धोने के बर्तन की तरह इस्तेमाल करते हैं। कपड़े धोने के समय उन्हें कई कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है क्योंकि इनसे न तो अच्छे से साबुन लग पाता है, न ही कपड़े सही से साफ हो पाते हैं, और सबसे बड़ी परेशानी यह होती है कि गंदा पानी फेंकने की भी कोई निश्चित जगह नहीं होती। इस कारण, बच्चों को मजबूरी में एक ही बाल्टी के पानी से सारे कपड़े धोने पड़ते हैं, फिर चाहे वे ठीक से साफ हुए हों या नहीं। इस बस्ती में मूलभूत सुविधाओं का घोर अभाव है, और शायद यही कारण है कि यहां रहने वाले लोग बहुत कम हैं। लेकिन जो लोग रहते हैं, वे सिर्फ इसलिए यहां रहते हैं क्योंकि यहां का किराया बेहद कम है और इसीलिए वे किराया बचाने के लिए यह सब कष्ट झेलते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

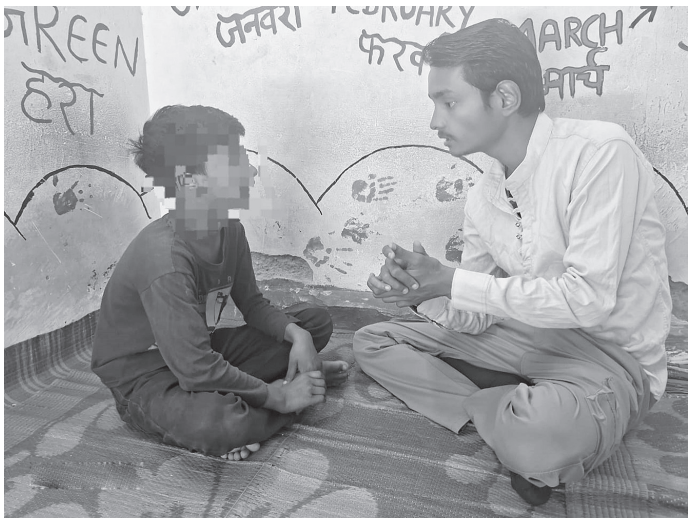

हर समस्या का हल है

बातूनी रिपोर्टर आयुष व रिपोर्टर किशन

कोई भी समस्या ऐसी नहीं होती जिसका समाधान न हो, बस अक्सर हमें यह नहीं पता होता कि उसका हल कैसे निकाला जाए। ऐसा ही कुछ अनुभव बालकनामा के पत्रकारों को तब हुआ जब वे पश्चिम दिल्ली की बस्तियों में पहुँचे।

वहां उन्होंने एक 8 वर्षीय बालक मोहन (परिवर्तित नाम) से मुलाकात की, जिसने मासूमियत के साथ अपनी कठिनाइयाँ साझा कीं। वह बच्चा बिहार से था और पहले अपने गांव में नियमित रूप से स्कूल जाया करता था, लेकिन जब उसका परिवार दिल्ली आया, तो यहाँ की परिस्थितियाँ उसके लिए बिल्कुल नई थीं। न तो जगह की जानकारी थी, न ही शिक्षा प्रणाली की समझ।

स्थानीय पड़ोसियों के बच्चों ने मदद की और उसका दाखिला पहली कक्षा में करवा दिया। वह बच्चा बहुत खुश था और रोज स्कूल जाने लगा। लेकिन खुशी के ये दिन ज्यादा देर नहीं टिके। कुछ ही समय बाद जब परीक्षा का समय आया, तो शिक्षकों ने उसे बार-बार अपना खाता खुलवाने के लिए कहना शुरू कर दिया। बालक समझ नहीं पाया कि खाता क्या होता है और क्यों जरूरी है। वह अपनी इस उलझन को लेकर अपने माता-पिता के पास गया, लेकिन उन्हें भी इसकी कोई जानकारी नहीं थी। जब वे बैंक गए, तो वहाँ के कर्मचारियों ने इतनी जटिल जानकारी दी कि खाता खुलवाना उनके लिए एक मुश्किल कार्य बन गया। एक दिन जब वे बैंक से निराश होकर लौट रहे थे, तब उनकी मुलाकात चेतना संस्था के कार्यकताओं से हुई।

कार्यकताओं ने न सिर्फ समस्या को गंभीरता से सुना, बल्कि उसे 'बढ़ते कदम' संगठन से जोड़ा। बच्चे और उसके माता-पिता ने अपनी परेशानियाँ खुलकर साझा कीं और बताया कि इस खाता न खुलने की समस्या के कारण वे स्कूल छोड़ने की सोच रहे थे। लेकिन चेतना के कार्यकताओं ने हार नहीं मानी।

उन्होंने बच्चे और उसके माता-पिता को साथ लेकर बैंक गए और पूरा प्रक्रिया समझाते हुए उसका खाता खुलवाया।

अब मोहन न केवल रोज स्कूल जाता है, बल्कि पहले से कहीं अधिक आत्मविश्वास से भरा हुआ है।

जिम्मेदारियों के बोझ तले दबता बचपन

बातूनी रिपोर्टर अभिषेक व रिपोर्टर किशन

बच्चे अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहते हैं, लेकिन घर के घरेलू कामकाज और विभिन्न समस्याओं के कारण वे अक्सर घर की जिम्मेदारियों में उलझकर रह जाते हैं। इसका सीधा असर उनकी शिक्षा पर पड़ता है, और वे स्कूल नहीं जा पाते। नोएडा की एक बस्ती में जब बालकनामा टीम पहुंची, तो वहां एक 10 वर्षीय बालक रोहन (परिवर्तित नाम) ने अपने जीवन की कठिन सच्चाई साझा की। उसने बताया कि लगभग पांच महीने पहले तक वह स्कूल जाता था और तीसरी कक्षा तक पढ़ाई कर चौथी कक्षा में पहुंच गया था, लेकिन चौथी की परीक्षा देने से पहले उसके पिता के दाहिने पैर में लकवा मार गया। इस हादसे ने पूरे परिवार की ज़िंदगी बदल दी। पिता बैटरी रिक्शा चलाते थे।

एक दिन, सड़क पर एक व्यक्ति को बचाने की कोशिश में उनका रिक्शा पलट गया, जिससे उनका पैर बुरी तरह घायल हो गया और उन्हें लकवा मार गया। उस दिन से वे चलने-फिरने और काम करने में असमर्थ हो गए। घर में अब कमाने वाला कोई नहीं बचा, और मां कोठियों में काम करने जाती हैं। जो थोड़ा-बहुत पैसा आता है, उससे ही घर चलता है। पिता की देखभाल, खाना-पानी देना, और तीन साल की छोटी बहन की जिम्मेदारी इस मासूम बच्चे पर आ गई है। वह चाहता है कि वह फिर से स्कूल जाए, लेकिन हालात उसे ऐसा नहीं करने दे रहे। जब हमने बच्चे से बात की, तो उसे समझाया कि जैसे ही उसके पिता की तबीयत थोड़ी सुधरे, वह स्कूल छोड़ने का फैसला न ले। उसे स्कूल दोबारा शुरू करने की हिम्मत रखनी चाहिए। हमने उसे यह भी सलाह दी कि वह अपने पिता को साथ लेकर स्कूल जाए और शिक्षकों को स्थिति की जानकारी देकर फिर से नामांकन करवाए।

शिक्षा की रोशनी में आशा की उड़ान

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक,
बातूनी रिपोर्टर: आईशा

बालकनामा रिपोर्टर ने हाल ही में जयपुर की जामडोली कच्ची बस्ती का दौरा किया, जहां एक 10 साल की बालिका अमीषा (परिवर्तित नाम) से मुलाकात हुई। अमीषा ने बताया कि उसने बहुत कम उम्र से ही अपने परिवार की आर्थिक मदद के लिए चूड़ियों में नग लगाने का काम करना शुरू कर दिया था। छोटी-छोटी उंगलियों से घंटों बैठकर वह यह काम करती थी, जिससे उसका स्कूल जाना संभव नहीं हो पाया। वह बताती है कि उसके माता-पिता भी शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं थे और चूंकि वह घर में सबसे जल्दी और बेहतर तरीके से यह काम कर पाती थी, इसलिए कभी किसी ने यह नहीं सोचा कि उसे स्कूल भेजा जाए। अमीषा के मन में पढ़ाई की इच्छा तब जागी जब उसने देखा कि बस्ती के अन्य बच्चे चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर पढ़ने जाते हैं। उसका मन भी ललचाया कि काश वह भी पढ़ने जा पाती। कुछ दिनों तक वह बच्चों के

साथ केंद्र जाने लगी और वहीं चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने उसके माता-पिता को समझाया कि शिक्षा के बिना उसका भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। यह बात उनके मन को छू गई और उन्होंने अमीषा को स्कूल भेजने का निर्णय लिया। आज अमीषा नियमित रूप से स्कूल जाती है और कक्षा दो में पढ़ रही है। उसे पढ़ाई में गहरी रुचि है, खासतौर पर हिंदी और चित्रकला उसके पसंदीदा विषय हैं। वह मुस्कराते हुए कहती है, "मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है। अब मैं पढ़-लिखकर बड़ी अफसर बनना चाहती हूँ। छुट्टी के दिन मैं अब भी चूड़ियों में नग लगाने का काम करती हूँ, ताकि घर की थोड़ी मदद हो सके, लेकिन अब मेरा सपना है कि पढ़ाई में सबसे आगे रहूं।"

जोखिम भरे कामों के सहारे, बच्चे चला रहे हैं अपने घर का गुजारा

बातूनी रिपोर्टर सनी व रिपोर्टर किशन

जब भी बालकनामा के पत्रकार नोएडा के विभिन्न इलाकों का दौरा करते हैं, तो यह दृश्य अक्सर सामने आता है कि ज्यादातर स्थान खाली पड़े रहते हैं। इन खाली जगहों के आसपास ऊँची-ऊँची इमारतों का निर्माण कार्य चल रहा होता है, और उनसे निकलने वाला मलबा इन्हीं खाली स्थानों पर फेंक दिया जाता है।

नोएडा सेक्टर 62 की झुग्गी बस्ती में रहने वाले 14 वर्षीय वीर (परिवर्तित नाम) बताते है कि वह और उसके जैसे कई बच्चे सड़क किनारे की बस्तियों में रहते हैं। रोज सुबह, दोपहर और शाम के समय जब वे पानी भरने के लिए निकलते हैं, तो पास की एक खाली जमीन पर उन्हें निर्माण स्थल का मलबा पड़ा मिलता है। इस मलबे को बीनने के लिए रोज लगभग 20 बच्चे वहाँ मौजूद रहते हैं, जिनकी उम्र 7 से 14 वर्ष के बीच होती है। सुबह 7 बजे से ही बच्चे वहाँ पहुँच जाते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि किसी भी वक्त एक ट्रैक्टर आएगा, जो नया मलबा लाएगा। जैसे ही बच्चे दूर से ट्रैक्टर को आते देखते हैं, वे दौड़कर उस पर चढ़ने की कोशिश करते हैं, ताकि उसमें से लोहे के सरिया, ऐल्युमिनियम, प्लास्टिक जैसी चीजें निकाल सकें जिन्हें बेचकर उन्हें कुछ पैसे मिल जाएँ। कई बार बच्चे ट्रैक्टर पर चढ़ने की कोशिश में गिर जाते हैं और उन्हें गंभीर चोटें भी आती हैं। ये बच्चे मलबा अपने नंगे हाथों से बीनते हैं, उनके पास न तो कोई औजार होता है, न ही कोई सुरक्षा उपकरण। मलबे में छिपे नुकीले टुकड़ों से उनके हाथ कट जाते हैं, लेकिन मजबूरी इतनी है कि वे रुकते नहीं। वहाँ न कोई बड़ा होता है, न कोई देखरेख करने वाला। वे यह सब केवल इसलिए करते हैं ताकि अपने परिवार के लिए कुछ कमा सकें और अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए थोड़े पैसे जोड़ सकें।

जहां बचपन पढ़ता भी है और कमाता भी

बालकनाम रिपोर्टरः दामिनी,
बातूनी रिपोर्टरः रोहित

हाल ही में बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की कच्ची बस्ती, हसनपुरा भट्टा का दौरा किया। दौरे के दौरान रिपोर्टर की नजर एक छोटी सी परचूनी की दुकान पर काम कर रहे 12 वर्षीय बालक मोहित (परिवर्तित नाम) पर पड़ी। बातचीत की शुरूआत करते हुए रिपोर्टर ने जब मोहित से उसका नाम, परिवार और पढ़ाई के बारे में पूछा, तो मोहित ने मुस्कुराते हुए बताया - मेरा नाम मोहित है, मैं कक्षा 6 में पढ़ता हूँ। मेरी दो बड़ी बहनें हैं और एक छोटा भाई है। वह आगे बताता है कि पढ़ाई के साथ-साथ वह अपने पिता के काम में भी हाथ बटाता है। जब उसके पिता बाजार से दुकान के लिए सामान लेने जाते हैं, तब वह दुकान संभालता है। रोज की जरूरत का सामान लाना पड़ता है, क्योंकि परिवार की आय सीमित है अतः दुकान के लिए थोक में सामान खरीदना संभव नहीं

है। रोहित रोजाना दो से तीन घटे दुकान पर बैठता है और अपने पिता की मदद करता है। गर्व से वह बताता है, "पापा कहते हैं कि तुमने पढ़ना सीख लिया है, अब तुम पर्ची बनाकर सामान की सूची दे देते हो, जिससे मुझे आसानी होती है। यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगता है।" मोहित को यह एहसास है कि उसका यह छोटा सा योगदान पूरे परिवार के लिए बहुत मायने रखता है। उसके शब्दों में न सिर्फ जिम्मेदारी की भावना झलकती है, बल्कि अपने पिता के प्रति आदर और सहयोग का भाव भी साफ दिखाई देता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

आर्थिक तंगी में फंसे बच्चों के शिक्षा के सपने

ब्यूरो रिपोर्ट

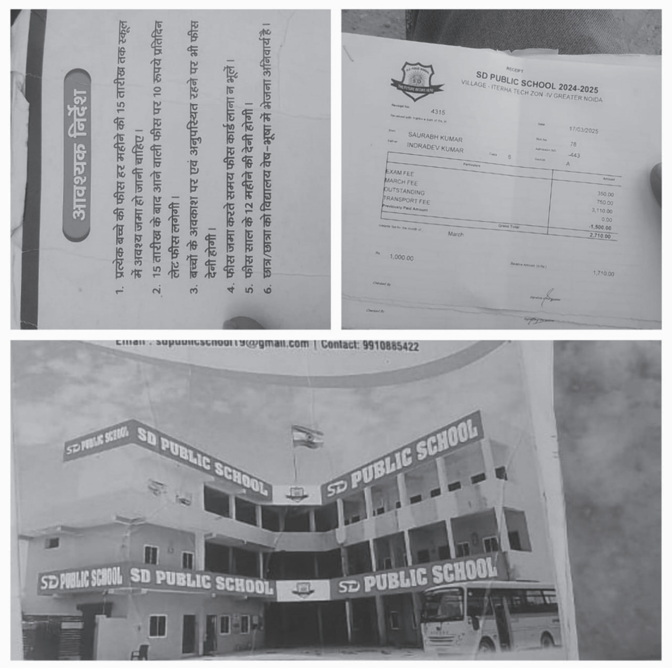

सड़क और कामकाजी बच्चे अपनी आर्थिक स्थिति के कारण हर परिस्थिति में सहज और सुरक्षित महसूस नहीं कर पाते। रोजाना उन्हें कई तरह की चुनौतियों और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हाल ही में नोएडा की कुछ बस्तियों में बालकनाम अखबार के पत्रकार पहुंचे और वहां रहने वाले बच्चों से बातचीत की। इसी दौरान जब पत्रकारों ने बच्चों से स्कूल जाने की स्थिति के बारे में पूछा, तो 13 वर्षीय पबन (परिवर्तित नाम) ने अपनी कहानी साझा की। उसने बताया कि वह पिछले कई वर्षों से अपने माता-पिता के साथ नोएडा के चार मूर्ति के पास एक गांव में रह रहा है। पहले वह गांव के पास स्थित एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करने जाया करता था, लेकिन अब उसने स्कूल जाना बंद कर दिया है। पबन ने बताया कि उस स्कूल में दाखिले के साथ कई सख्त नियम लागू थे। हर महीने तय समय पर फीस जमा करनी होती थी और यदि देरी हो जाए तो हर दिन 10 का जुमार्ना लगता था। छुट्टी लेने पर भी यही जुमार्ना लागू होता था। शुरूआत में इन नियमों को ठीक से नहीं समझा गया, लेकिन धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ने लगी। कभी-कभी पबन के पिता को काम की मजदूरी समय पर नहीं मिलती थी, जिससे समय पर फीस जमा नहीं हो पाती थी। परिणामस्वरूप हर महीने ब्याज बढ़ता चला गया। शिक्षक लगातार ब्याज चढ़ने की बात कहते रहते और फीस न जमा करने पर पबन को अन्य बच्चों के सामने शर्मिंदा किया जाता। जब वह फीस जमा करने जाता, तो एक महीने की अतिरिक्त फीस की मांग की जाती, और यदि वह देने में असमर्थ होता, तो उसे अपमानजनक बातें सुननी पड़तीं। इन तकलीफों से थककर पबन ने स्कूल जाना छोड़ दिया। अब वह घर पर ही रहता है, लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि स्कूल प्रशासन उसे ट्रांसफर सर्टिफिकेट भी नहीं दे रहा है। इस कारण वह किसी अन्य स्कूल में दाखिला नहीं ले पा रहा है, जिससे उसका भविष्य अधर में लटक गया है।

जब बचपन गुजरता है काम की छांव में

बातूनी रिपोर्टर जोन व रिपोर्टर किशन

जैसा कि आप अपने आस-पास के गली-मोहल्लों में बेलदारी करते हुए लोगों को रोजाना देखते होंगे, वैसे ही कई माता-पिता अपने छोटे-छोटे बच्चों को भी साथ लेकर काम पर आते हैं। नोएडा के एक गांव के करीब बसे बस्तियों में रहने वाला एक 13 वर्षीय बालक राज (परिवर्तित नाम) बताता है कि उनके बस्ती में अधिकतर लोग बेलदारी का काम करते हैं। वह रोजाना अपने माता-पिता को लंच देने जाता है और अक्सर देखता है कि 1 से 12 वर्ष तक के कई बच्चे अपने माता-पिता के साथ काम पर आते हैं। इस विषय पर बातचीत करते हुए एक 12 वर्ष की बालिका मौसमी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि छोटे-छोटे बच्चे, जो 1 से 6 साल के होते हैं, तो काफी नन्हे होते हैं, लेकिन 6 से 12 साल के बच्चे कुछ हद तक समझदार होते हैं। वे अपने छोटे भाई-बहनों का ध्यान रखते हैं और इसी वजह से माता-पिता उन्हें काम पर साथ लेकर आते हैं क्योंकि आसपास का माहौल ठीक नहीं होता, और बच्चे आपस में खेलते-खेलते लड़ भी जाते हैं, जिससे छोटी-छोटी लड़ाई बड़ी बन जाती है। काम के दौरान, बच्चे अक्सर अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल करते हैं, और जब वे सो जाते हैं, तो माता-पिता के घरेलू कामों में भी थोड़ी मदद कर देते हैं। बालिका ने यह भी बताया कि जब बेलदारी का काम ठेके पर होता है, तो माता-पिता को ज्यादा मदद मिलती है, और वे अपने बच्चों को भी काम में लगाते हैं। बच्चे ईंट, सीमेंट और छोटे-मोटे सामान इधर-उधर रखने में मदद करते हैं ताकि काम जल्दी पूरा हो सके। इस तरह बच्चे भी परिवार के लिए मेहनत करते हुए बड़े होते हैं, लेकिन उनकी मासूमियत और बचपन कहीं पीछे छूट जाता है।

बस्ती के बीच गड्ढे की अनदेखी से बढ़ रहा बच्चों को खतरा

बातूनी रिपोर्टर सहाना व रिपोर्टर किशन

बस्ती के किनारे एक बड़ा गड्ढा खुदवाए जाने के बाद इलाके के बच्चों और निवासियों की जिन्दगी काफी मुश्किल हो गई है। खाली मैदान में खुदवाया गया यह गड्ढा न सिर्फ राह में बाधा बन गया है, बल्कि इसके कारण रोजाना कई परेशानियां भी पैदा हो रही हैं। बस्ती में रहने वाले बच्चों ने बताया कि इस इलाके में लगभग पचास से अधिक बस्तियां हैं और इसी बस्ती के पास उस मैदान के मालिक ने गड्ढा खुदवाया है, जो काफी गहरा और बड़ा है। गड्ढे में बस्ती का गंदा पानी, मल-मूत्र सब जमा हो जाता है, जिससे बदबू फैलती रहती है और आस-पड़ोस के घरों में रहना, खाना पकाना और खाना खाना भी मुश्किल हो गया है। बच्चों की चिंता सबसे ज्यादा इस बात को लेकर है कि उनके माता-पिता अपने छोटे भाई-बहनों को उनके भरोसे छोड़कर काम पर चले जाते हैं, लेकिन उस गड्ढे के कारण वे डरते रहते हैं कि कहीं कोई बच्चा उसमें गिर न जाए। सच पूछिए तो कई बच्चे पहले ही इस गड्ढे में गिर चुके हैं और कई बार उन्हें निकालना भी पड़ा है। लेकिन अगर कोई समय रहते ध्यान न दे तो बच्चे उस गड्ढे में डूब भी सकते हैं। गड्ढे के ऊपर न तो कोई टिन शीट लगी है न ही कोई सुरक्षा का इंतजाम, जिससे इस खतरे को बढ़ावा मिलता है। गड्ढे के बाहर जमा हुआ कूड़ा-करकट और गंदा पानी आसपास फैलता रहता है, जिससे बीमारियां फैलने का खतरा भी बढ़ गया है। यह स्थिति बच्चों के लिए न केवल असुविधाजनक है, बल्कि उनकी जान के लिए भी एक गंभीर खतरा बन गई है। इस इलाके के लोगों की आवाज बनकर यह कहना जरूरी है कि इस गड्ढे को जल्द से जल्द सुरक्षित तरीके से बंद किया जाए, ताकि बच्चों और बस्ती के निवासियों को हो रही इन परेशानियों से छुटकारा मिल सके।

मातृत्व दिवस पर मां के लिए बच्चों ने किया कुछ खास

बालकनामा रिपोर्टर- दामिनी
बातूनी रिपोर्टर- दीपिका

मदर्स डे वह खास दिन होता है, जब हम अपनी माँ के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करते हैं। इसी मौके पर जयपुर की जयसिंहपुरा खोर बस्ती के बच्चों ने इस बार मदर्स डे पूरे दिल से मनाया। यह दिन खासकर सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए बेहद खास रहा। चेतना के एजुकेशन सेंटर से जुड़े बच्चों ने अपनी माताओं के साथ मिलकर इस दिन को यादगार बना दिया। आमतौर पर अपनी व्यस्त दिनचर्या में जुटी माताओं के साथ बच्चों को समय बिताने का अवसर नहीं मिल पाता, लेकिन इस खास दिन ने माँ-बच्चे के रिश्ते को और भी मजबूत किया। बच्चों ने कई दिन पहले से पैसे जोड़कर अपनी-अपनी तरह से सरप्राइज की तैयारी की जिसमें किसी ने केक लाकर अपनी मम्मी के साथ सेलिब्रेट किया, तो किसी ने अपने हाथों से ग्रीटिंग कार्ड, कागज के फूल और ड्रॉइंग बनाकर अपनी भावनाएं जाहिर कीं। 11 वर्षीय बालिका दीपिका ने मुस्कराते हुए बताया, 'हमने मम्मी के लिए गिफ्ट खरीदा और केक भी कटवाया। मम्मी ने कहा कि उन्हें ऐसा लगा जैसे उनका जन्मदिन हो। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था।' वहीं 13 साल की बालिका सिया ने कहा, 'हमें पहले नहीं पता था कि मदर्स डे, बालिका दिवस और चिल्ड्रन्स डे भी मनाए जाते हैं। लेकिन चेतना के एजुकेशन सेंटर से जुड़ने के बाद हमें यह सब जानने को मिला और समझ आया कि हमारी मम्मियाँ हमारे लिए कितना कुछ करती हैं। अब हमें भी उनके लिए कुछ करना चाहिए।' यह दिन बच्चों के लिए एक उत्सव की भाँति रहा और उनके लिए ये दिवस माँ के प्रति जुड़ाव, जिम्मेदारी और रिश्तों की गहराई को समझने का जरिया बन गया।

पानी की किल्लत छीन रही बच्चों कि पढ़ाई की राह

बालकनामा रिपोर्टर- दीपक
बातूनी रिपोर्टर- विशाल

बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया और वहां रह रहे बच्चों से बातचीत कर उनके अनुभव जानने का प्रयास किया। इसी कड़ी में, उन्होंने जयपुर की लखेसरा कच्ची बस्ती में 12 वर्षीय बालक विशाल से मुलाकात की। विशाल ने बताया कि इस समय बस्ती के अधिकतर बच्चे सुबह-सुबह लगभग दो किलोमीटर दूर स्थित तालाब पर चले जाते हैं, जिससे वे समय पर स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। इसकी मुख्य वजह बस्ती में पानी की गंभीर समस्या है। पानी के अभाव के कारण माता-पिता भी बच्चों को तालाब भेजने से नहीं रोकते, क्योंकि बच्चे वहां से मछलियां पकड़ लाते हैं और वहीं स्नान भी कर लेते हैं। कई बार बच्चों को वहीं खाना भी मिल जाता है, जिससे घर पर रोटी की चिंता कम हो जाती है। इस बस्ती में पानी की किल्लत और रोजगार की कमी के कारण कई परिवारों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। वहीं, बच्चों की शिक्षा भी इस स्थिति से बुरी तरह प्रभावित हो रही है। तालाब, जो बस्ती से लगभग दो किलोमीटर दूर है, अब बच्चों की पढ़ाई का सबसे बड़ा बाधक बन गया है। स्कूल जाने की बजाय बच्चे दिनभर तालाब पर मछलियां पकड़ने चले जाते हैं। पानी की उपलब्धता और खुले वातावरण के कारण उन्हें तालाब पर समय बिताना ज्यादा अच्छा लगता है। वे पकड़ी गई मछलियों को पकाकर खाते हैं, और कुछ छोटी मछलियों को बोतलों या बाल्टियों में पालते भी हैं। वास्तव में, यह दिनचर्या बच्चों को शिक्षा से दूर ले जा रही है और उनके भविष्य को एक अनिश्चितता की ओर धकेल रही है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

उम्मीदों की राह पर बीना का सफर

बातूनी रिपोर्टर रेशमा व रिपोर्टर किशन

जब घर का सबसे जिम्मेदार सदस्य घर में मौजूद नहीं होता, तो घर अपने आप बिखरने लगता है और रोज नई-नई समस्याएं सामने आने लगती हैं। पश्चिम दिल्ली की एक बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय बालिका बीना (परिवर्तित नाम) ने अपनी ज़िंदगी की बिखरी हुई कहानी खुलकर बताई। बीना बिहार की रहने वाली है और उसने बताया कि कैसे पहले उनका परिवार खुशहाल था, लेकिन फिर किस तरह से मुश्किलों ने उनकी ज़िंदगी को बदल दिया। चार साल पहले वे गांव में रहते थे, जहां पूरा परिवार - तीन बहनें, दो भाई और माता-पिता - साथ थे। पिताजी दिल्ली में काम करते थे, और गांव में खेती-बाड़ी होती थी। लेकिन पिताजी की अचानक तबियत बिगड़ गई, वे गांव लौट आए और इलाज में सारे पैसे खर्च हो गए, बावजूद इसके उनका निधन हो गया। पिताजी के जाने के बाद परिवार की हालत बदतर हो गई, घर में खाने-पीने तक का संकट आ गया। स्कूल दूर था, इसलिए बीना ट्यूशन भी जाती थी ताकि पढ़ाई जारी रख सके। पिताजी के मरने के बाद उनकी मौसी ने परिवार को दिल्ली बुला लिया और माता जी तथा बड़ी बहनों को फैक्ट्री में काम लगवा दिया। जिंदगी में जैसे सब कुछ खत्म हो गया हो, बीना ने सोचा कि अब कुछ अच्छा नहीं होगा, और जीवन रोते-रोते गुजरेगा। लेकिन एक दिन जब उसने अपने मामा के बेटे को बैग टांगे हुए देखा जो कहने लगा कि वह 'चेतना संस्था' में पढ़ाई करता है, तो बीना ने भी वहां जाकर अपनी पूरी कहानी बताई और संस्था से जुड़ गई। आज रुबीना बढ़ते कदम संगठन की सदस्य है, पढ़ाई कर रही है और पांचवीं कक्षा में है। उसका सपना है कि वह ब्यूटी पार्लर का काम सीखकर अपने घर को खुशियों से भर दे। बीना की ये खबर हमें सिखाती है कि सही मदद और उम्मीद से जीवन के अंधेरों को भी रोशनी में बदला जा सकता है।

ख्वाहिशों को थाम कर बच्चों ने पूरा किया तैरने का सपना

बालकनामा रिपोर्टर- दामिनी
बातूनी रिपोर्टर- सोहीन

बालकनामा रिपोर्टर ने सड़क पर रहने वाले और कामकाजी बच्चों के अनुभव जानने के लिए जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान एक बेहद प्रेरणादायक बात सामने आई। जहां गर्मी की छुट्टियों में ज्यादातर बच्चे मौज-मस्ती और आराम में अपना समय बिता रहे हैं, वहीं इन बस्तियों के कुछ बच्चों ने अपनी इच्छाओं और जरूरतों को सीमित करके एक मिसाल कायम की है। इन बच्चों ने अपनी छोटी-छोटी ख्वाहिशों जैसे टॉफी, आइसक्रीम और खेल के खर्च में कटौती करके, खुद के दम पर स्विमिंग पूल जाने का सपना पूरा किया। जब रिपोर्टर ने जयपुर के जयसिंहपुरा खोर बस्ती में रहने वाले बच्चों से बातचीत की, तो उन्होंने कहा, 'हमने कई हफ्तों तक बचत की, टॉफी और आइसक्रीम नहीं खरीदी, खेलों में कम खर्च किया ताकि हम तैराकी का आनंद ले सकें।' बच्चों ने बताया कि जैसे ही उनके पास पर्याप्त पैसे इकट्ठा हुए, वे पास के एक स्थानीय स्विमिंग पूल में गए और वहां पूरे जोश और खुशी के साथ तैराकी की। जब पूल की फीस के बारे में पूछा गया, तो बच्चों ने बताया कि वहाँ दो घंटे के लिए प्रति व्यक्ति 100 शुल्क लिया जाता है। इन बच्चों का यह प्रयास वास्तव में दिल को छू लेने वाला है, यह ये भी दिखाता है कि सीमित संसाधनों के बावजूद, अगर इच्छाशक्ति और सोच हो, तो हर सपना सच किया जा सकता है।

मॉक ड्रिल बना सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए जीवन रक्षक अभ्यास

बालकनामा रिपोर्टरः सबेरुल
बातूनी रिपोर्टरः सुमित

भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर बढ़ते तनाव और लगातार हो रही सैन्य गतिविधियों ने देशभर में चिंता और अस्थिरता का माहौल बना दिया है। ऐसे समय में, न सिर्फ युवाओं को बल्कि बच्चों को भी आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए तैयार करना बेहद जरूरी हो गया है। इसी उद्देश्य से राज्य के एक बाल संरक्षण केंद्र में सड़क और कामकाजी बच्चों के लिए एक विशेष मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। यह अभ्यास जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और एक प्रमुख स्वयंसेवी संस्था के संयुक्त प्रयास से किया गया, जिसमें 8 से 14 वर्ष की उम्र के बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को युद्ध जैसी आपदाओं जैसे हवाई हमले, बम धमाके, गैस रिसाव, आगजनी और इमारत गिरने जैसी स्थितियों से बचने के व्यावहारिक तरीके सिखाए गए। ड्रिल की शुरुआत सायरन की तेज आवाज से हुई, जिससे बच्चों को सतर्कता का संकेत मिला। इसके बाद उन्हें बताया गया कि खुली जगहों पर कैसे सिर और गर्दन की सुरक्षा करनी है, बिना घबराए सुरक्षित स्थान तक कैसे पहुँचना है, और सीमित संसाधनों में घायल व्यक्ति को प्राथमिक उपचार कैसे देना है। प्रशिक्षकों ने बच्चों को समूहों में बांटकर बचाव कार्यों का अभ्यास करवाया। इसमें आग बुझाने के उपकरणों के उपयोग और रेड क्रॉस की बुनियादी तकनीकों की जानकारी भी शामिल थी। स्वयंसेवी संस्था के प्रतिनिधि ने बताया, 'हमारा उद्देश्य केवल मॉक ड्रिल कराना नहीं है, बल्कि बच्चों को मानसिक रूप से इतना सक्षम बनाना है कि वे किसी भी आपदा की स्थिति में समझदारी से काम ले सकें। सबसे अधिक असुरक्षित वही होते हैं जो प्रशिक्षित नहीं होते।' 14 वर्षीय सुमित, जो नियमित रूप से स्कूल जाते हैं, ने मॉक ड्रिल के बाद कहा, 'पहले हमें बहुत डर लगता था, लेकिन अब हम जानते हैं कि अगर कोई आपदा आती है तो हमें क्या करना है। अब हम खुद को और दूसरों को बचाने की जिम्मेदारी समझते हैं।' यह मॉक ड्रिल, अभ्यास के साथ-साथ एक सामाजिक संदेश भी था- कि देश का भविष्य माने जाने वाले बच्चों को हर परिस्थिति से जूझने के लिए तैयार करना आज की जरूरत है। ऐसे कार्यक्रम बच्चों को युद्ध जैसी कठिन परिस्थितियों में भी साहस और विवेक के साथ जीने की प्रेरणा देते हैं।

'बढ़ते कदम' साथियों संग बना अपनी पहचान, बाल साथी ने सीख कर पाया हिंदी का ज्ञान

रिपोर्टरः राजकिशोर
बातूनी रिपोर्टरः लक्ष्मी

बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर एक दिन गुरुग्राम के निवार्णा कंट्री समुदाय में रिपोर्टर बैठक आयोजित रहे थे। इस दौरान बच्चों के साथ बातचीत चल रही थी। उसी समय 'बढ़ते कदम' समूह के लीडर अहसान ने एक बच्चे के बारे में जानकारी साझा की। अहसान ने बताया कि हमारी बस्ती में हाल ही में एक बच्चा आया है, जिसे हिंदी बिल्कुल नहीं आती थी। वह न हिंदी बोल सकता था, न पढ़ सकता था, न लिख सकता था और न ही समझ सकता था। इसी वजह से वह ज्यादातर समय घर पर ही रहता था और किसी से उसकी दोस्ती नहीं हो पा रही थी। हम उसकी बातें नहीं समझ पाते थे और वह भी हमारी बातों को नहीं समझ पाता था। धीरे-धीरे वह बच्चा अकेला और उदास रहने लगा। तब हमने तथा उसके कुछ दोस्तों ने, मिलकर उसकी मदद करने की सोची।

हमने उसे अपने समूह में शामिल किया। कुछ दिनों में वह हमसे घुलने-मिलने लगा, हमारी बातें थोड़ा-थोड़ा समझने लगा और खुद भी अपनी बात कहने की कोशिश करने लगा। धीरे-धीरे उसने हिंदी के कई शब्द सीख लिए। हमने उसे चेतना के शिक्षा केंद्र भी ले जाना शुरू किया और वहां के सामाजिक कार्यकर्ता को उसकी भाषा की समस्या के बारे में बताया। कार्यकर्ता ने उसके माता-पिता से बात की और फिर वह बच्चा नियमित रूप से सेंटर आने लगा। अब वह हिंदी सीख रहा है। आज उसकी कई दोस्तों से अच्छी दोस्ती हो गई है, जो उसकी मदद करते हैं। वह भी अब अच्छी हिंदी बोलने की कोशिश करता है, सामने वाले की बात को समझने की कोशिश करता है और अपनी बात भी कह पाता है। अब वह बच्चा नियमित रूप से केंद्र पर आकर पढ़ाई करता है, जिससे उसे बहुत मदद मिल रही है। अगर वह कुछ समय और इसी माहौल में रहा, तो निश्चित रूप से वह हिंदी अच्छे से बोलने लगेगा और उसकी भाषा संबंधी दिक्कतें पूरी तरह खत्म हो जाएंगी। अब तो उसके माता-पिता भी बहुत खुश हैं कि उनका बच्चा इतना कुछ सीख रहा है। वे चाहते हैं कि उसका दाखिला यहीं के स्कूल में हो जाए, ताकि उसका समुचित विकास हो सके। इस बच्चे की मदद करने में 'बढ़ते कदम' के सभी सदस्यों का योगदान वास्तव में सराहनीय है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार, एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org